कई देश भारतीयों का बढ़ा रहे हौसला

अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, साउथ कोरिया, सिंगापुर समेत 40 से अधिक देशों की ओर से सहायता सामग्री या तो देश में पहुंच चुकी है या पहुंचने की प्रक्रिया में है। अमेरिका ने जरूरी दवाएं, एस्ट्राजेनेका-ऑक्सफर्ड की वैक्सीन यानी कोविशील्ड और इसे बनाने के लिए कच्चा माल भी भिजवाया है।

श्याम देसाई।।

भारत इन दिनों जिस तरह के हालात से जूझ रहा है, उसे देखते हुए दुनिया के तमाम देश मदद के लिए आगे आए हैं। अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, साउथ कोरिया, सिंगापुर समेत 40 से अधिक देशों की ओर से सहायता सामग्री या तो देश में पहुंच चुकी है या पहुंचने की प्रक्रिया में है। अमेरिका ने जरूरी दवाएं, एस्ट्राजेनेका-ऑक्सफर्ड की वैक्सीन यानी कोविशील्ड और इसे बनाने के लिए कच्चा माल भी भिजवाया है।

यों तो भारत की मदद का फैसला लेने में अमेरिकी प्रशासन की शुरुआती हिचक से कुछ सवाल खड़े होने लगे थे, लेकिन राष्ट्रपति जो बाइडेन ने सही समय पर सटीक फैसला करके उन्हें जड़ें जमाने का मौका नहीं दिया। जिन देशों ने भारत की ओर मदद का हाथ बढ़ाया है, उनसे सरकार ने मेडिकल ऑक्सिजन, रेमडेसेवियर जैसी दवाएं मांगी हैं ताकि कोविड से गंभीर रूप से बीमार लोगों का इलाज किया जा सके। विदेश सचिव हर्ष श्रृंगला ने बताया है कि इन देशों को हमने अपनी जरूरतें बता दी हैं। इस बारे में उच्चस्तर पर बातचीत चल रही है। महामारी से जंग में सरकारों के साथ कई देशों के आम लोग भी भारतीयों का हौसला बढ़ा रहे हैं।

वे इसके लिए सोशल मीडिया पर संदेश दे रहे हैं और अपनी सरकारों से हर संभव तरीके से भारत की मदद करने का आग्रह कर रहे हैं। भारत ने भी श्वैक्सीन मैत्रीश के तहत नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, अफगानिस्तान, श्रीलंका, मालदीव, मॉरिशस जैसे देशों को न सिर्फ टीके की सप्लाई की बल्कि वह डब्ल्यूएचओ की कोवैक्स इनीशिएटिव में भी योगदान कर रहा है। कोवैक्स नाम की पहल खासतौर पर वैसे विकासशील और गरीब देशों को वैक्सीन दिलाने के लिए शुरू की गई है, जिनके पास अपना टीका नहीं है। इसलिए आज दुनिया भर से भारतीयों की मदद के लिए जो हाथ आगे बढ़ रहे हैं, उसमें कुछ भूमिका निश्चित रूप से भारत के उन कार्यों से बने सद्भाव की भी है।

इस मुश्किल घड़ी में जिस तरह से कई देश मदद के लिए आगे आए हैं, उससे पता चलता है कि दुनिया भले अलग-अलग देशों की सरहदों में बंटी हो, लेकिन इंसानियत का धागा सबको इतनी मजबूती से जोड़ता है कि किसी भी संकट की घड़ी में सारी सरहदें छोटी पड़ जाती हैं। इसके साथ ही हमें यह भी याद रखना होगा कि कोरोना एक वैश्विक महामारी है। जब तक दुनिया में कहीं भी इससे लोग पीड़ित रहेंगे, तब तक हम इसके खिलाफ जंग नहीं जीत पाएंगे। इसलिए हमें इससे मिलकर लड़ना होगा। तभी हम सदी में एक बार आने वाली ऐसी आपदा को हरा पाएंगे।

युद्ध में विजय

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

देवी भागवत पुराण में इस स्थान पर भगवान विष्णु द्वारा युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए आदिशक्ति की स्तुति की गई है। भगवान विष्णु शक्ति से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, "हे माता मेरी सहायता करो क्योंकि मैं युद्ध करते-करते बहुत खिन्न हो गया हूं। हे देवताओं की पीड़ा हरने वाली दृ आपके वरदान से ये दोनों दानव बहुत घमंड से भर गए हैं। अब आप ही सहायता करें जिससे मैं विजयी हो पाऊं। मेरी खिन्नता का नाश करें।" भगवान विष्णु की बात सुनकर देवी भगवान विष्णु से कहती हैं, "आप फिर से युद्ध करें। इस बार मैं छल से उन दोनों दुष्टों को मोहित कर दूंगी। जब मैं अपनी वक्र दृष्टि से उन्हें मोहित करूंगी । फिर आप उन दोनों का अंत कर दीजिएगा।"

संपादकीय

इकॉनमी को भी फायदा

अमीर-विकसित देशों को 50 अरब डॉलर की यह रकम भविष्य की प्रतिबद्धता के रूप में नहीं बल्कि तुरंत (अपफ्रंट) खर्च, निवेश और वैक्सीन की अतिरिक्त खुराक के दान के रूप में देनी होगी। इसमें कोई भी टालमटोल और जिम्मेदारी को नकारने का मतलब महामारी को और तबाही मचाने की छूट देना होगा। यह विकसित देशों की खुद की सुरक्षा के लिए भी उतना ही घातक होगा। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति भी डांवांडोल बनी रहेगी, जिसका सबसे ज्यादा नुकसान विकसित देशों को ही होगा। गोपीनाथ का आकलन है कि महामारी को खत्म करने की इस तीन स्तरीय रणनीति पर 50 अरब डॉलर तुरंत खर्च करना न सिर्फ वैश्विक जनहित में है बल्कि इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी भारी फायदा होगा। महामारी पर काबू पाने की स्थिति में वैश्विक अर्थव्यवस्था को 9 खरब डॉलर का फायदा होगा। यही नहीं, अमीर-विकसित देशों को इससे एक खरब डॉलर की अतिरिक्त टैक्स आय होगी जो उनके द्वारा खर्च की जाने वाली 50 अरब डॉलर की 20 गुनी रकम है। जाहिर है, महामारी पर तुरंत काबू पाना सबसे अच्छी आर्थिक नीति भी है। क्या जी-7 के देश यह समझने के लिए तैयार हैं? भारत समेत कई देशों में कोरोना संक्रमण के अत्यधिक मामलों से निपटने की चुनौती है, जहां लाखों लोगों की जिंदगी दांव पर लगी हुई है।

सभी देश, खासकर अमीर-विकसित देश और अन्य बहुपक्षीय एजेंसियां तुरंत 50 अरब डॉलर जुटाने और उसे व्यापक टीकाकरण, टेस्टिंग, निगरानी और इलाज पर खर्च करने के लिए तैयार हों तो महामारी को काबू में किया जा सकता है।

अमीर देश खोलें तिजोरी

आनंद प्रधान।।

दुनिया भर में तबाही मचा रही कोरोना महामारी को वैश्विक स्तर पर जल्दी खत्म करने और आम जनजीवन, अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए 50 अरब डॉलर (लगभग 3.7 खरब रुपये) तुरंत खर्च करने की जरूरत है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की मुख्य अर्थशास्त्री गीता गोपीनाथ और शोधकर्ता रुचिर अग्रवाल ने पिछले दिनों जारी एक स्टाफ नोट में कहा है कि अगर सभी देश, खासकर अमीर-विकसित देश और अन्य बहुपक्षीय एजेंसियां तुरंत 50 अरब डॉलर जुटाने और उसे व्यापक टीकाकरण, टेस्टिंग, निगरानी और इलाज पर खर्च करने के लिए तैयार हों तो महामारी को काबू में किया जा सकता है।

इस प्रस्ताव का आधिकारिक तौर पर आईएमएफ से कोई लेना-देना नहीं है। इसके बावजूद आईएमएफ की मुख्य अर्थशास्त्री की ओर से चर्चा के लिए पेश इस प्रस्ताव ने दुनिया भर के पब्लिक पॉलिसी एक्सपर्ट्स का ध्यान खींचा है। इस प्रस्ताव की टाइमिंग भी महत्वपूर्ण है। यह ऐसे समय में आया है, जब 11-13 जून को लंदन में दुनिया के सबसे अमीर और ताकतवर देशों के समूह जी-7 की बैठक होने जा रही है, जिसमें कोरोना महामारी से प्रभावी तरीके से निपटने और वैश्विक अर्थव्यवस्था को पटरी पर

लाने का मुद्दा सबसे प्रमुख है। इस बैठक में दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत को भी शामिल होने का न्यौता मिला है।

गोपीनाथ ने अपने प्रस्ताव में तीन लक्ष्यों पर फोकस किया है और उसके लिए जरूरी धन का ब्यौरा दिया है। जैसा कि सभी महामारी और जन-स्वास्थ्य विशेषज्ञ कह रहे हैं कि इस महामारी को खत्म करने का एकमात्र उपाय व्यापक और यूनिवर्सल टीकाकरण है, गोपीनाथ भी इसी लक्ष्य को हासिल करने पर सबसे अधिक जोर देती हैं। उनके मुताबिक, महामारी से मुकाबले के लिए इस साल के आखिर तक दुनिया की 40 फीसदी आबादी और अगले साल के मध्य तक कुल 60 फीसदी आबादी का टीकाकरण जरूरी है। इसके लिए वे गरीब और विकासशील देशों को कोविड-19 वैक्सीन मुहैया कराने के लिए गठित कई संगठनों के समूह- कोवैक्स को तुरंत 4 अरब डॉलर का अतिरिक्त धन और वैक्सीन के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने के साथ-साथ अमीर देशों के पास उनकी अपनी जरूरत से ज्यादा जमा लगभग एक अरब वैक्सीन डोज गरीब और विकासशील देशों को दिलाने की वकालत करती हैं।

इस प्रस्ताव की खास बात यह है कि इसमें उन जोखिमों का भी जिक्र है, जो महामारी से निपटने की प्रक्रिया में आ सकते हैं। उदाहरण के लिए इसमें टीकाकरण के लक्ष्यों को हासिल करने में कई कारणों से हो रही देरी से कोरोना वायरस के म्यूटेट करने, ज्यादा घातक हो जाने और उस पर वैक्सीनों के कारगर न रह जाने से लेकर भविष्य में वैक्सीन की बूस्टर डोज की जरूरत पड़ने तक कई तरह के जोखिम बताए गए हैं। इनके मद्देनजर गोपीनाथ अगले साल की शुरुआत तक वैक्सीन की एक अरब अतिरिक्त डोज बनाने की क्षमता के विकास और वैक्सीन के बूस्टर डोज की तैयारियों पर 8 अरब डॉलर का एट-रिस्क निवेश चाहती हैं।

यही नहीं, वे वायरस के नए वैरिएंट्स की निगरानी प्रक्रिया को चुस्त-दुरुस्त करने और वैक्सीन तथा कोरोना की जांच किट्स और दवाइयों आदि की आपूर्ति चेन में किसी भी कारण से आने वाली बाधा से निपटने पर तीन अरब डॉलर के निवेश के पक्ष में हैं। लेकिन गोपीनाथ को पता है कि टीकाकरण, वायरस के नए म्यूटेंट की निगरानी, नए टीकों के विकास आदि में कई कारणों से अभी समय लग सकता है।

अष्टयोग-5046

	6	1		2		3
7	32	5	31	3	30	1
4				7		
	22	2	40	6	39	
	3			5		
1	34	6	37		28	
	5			1	2	4

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5045 का हल

4	3	2	5	1	7	6
1	28	6	29	4	30	2
5	4	3	6	2	1	7
2	36	7	38	6	25	3
6	5	4	7	3	2	1
7	33	5	36	5	33	4
3	2	1	4	7	6	5

Jagrutidaar.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

प्रस्ताव का सबसे बड़ा प्रावधान

मोहन। आश्चर्य नहीं कि गोपीनाथ के प्रस्ताव में कोरोना संक्रमण की जांच के लिए किट्स और इलाज के लिए दवाइयों, उपकरणों (पीपीई, वेंटिलेटर और आक्सीजन आदि) और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया है। उनके प्रस्ताव का सबसे बड़ा प्रावधान 30 अरब डॉलर इस पर खर्च होना है। महामारी को खत्म करने या उस पर काफी हद तक काबू पाने का गीता गोपीनाथ का यह प्रस्ताव कुछ सीमाओं और तात्कालिकता के दबावों के बावजूद संतुलित और काबिल-ए-जिक्र है। इसका 50 अरब डॉलर तुरंत खर्च करने का प्रस्ताव भी काफी हद तक कंजर्वेटिव है। इस महामारी से मुकम्मल तरीके से लड़ने के लिए जरूरत और ज्यादा धन की है, लेकिन असल सवाल यह है कि क्या अमीर-विकसित देश 50 अरब डॉलर की इस मामूली रकम के लिए भी अपनी तिजोरी खोलेंगे?